

भारतीय कृषि में महिलाओं की भूमिका एवं भविष्य की संभावनाएँ

लकी शाक्य^{1*}, विपिन कुमार और श्वेता रानी²

¹ बी.एस-सी कृषि (ऑनर्स), आर.एस.एम. पी.जी. कॉलेज, धामपुर, बिजनौर

*E-mail: luckyshakya8476@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, भारतीय कृषि में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक की नहीं, बल्कि एक मज़बूत रीढ़ की है। वे न केवल खेत में काम करती हैं, बल्कि बीज के चयन से लेकर कटाई के बाद के प्रसंस्करण तक पूरी प्रक्रिया का हिस्सा हैं। पुरुषों के पलायन के कारण ग्रामीण इलाकों में कृषि के “नारीकरण” का दौर चल रहा है

भारतीय कृषि में महिलाओं की उभरती प्रमुख भूमिकाएँ:-

- **उत्पादन में प्रमुख भागीदारी:** कृषि जनगणना के अनुसार, भारत की ग्रामीण महिला कार्यबल में लगभग 73-75% महिलाएँ कृषि और संबंधित गतिविधियों में शामिल हैं। वे खेती का 60% से 80% काम करती हैं।
- **पशुपालन एवं डेयरी:** ग्रामीण महिलाएँ पशुधन प्रबंधन, दूध निकालने, और चारा प्रबंधन में मुख्य भूमिका निभाती हैं।
- **बीज संरक्षण:** ग्रामीण महिलाएँ पारंपरिक बीजों को संरक्षित करने और जैव विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।



- **नवोन्मेषी भूमिकाएँ:** अब महिलाएँ केवल पारंपरिक खेती तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नमो ड्रोन दीदी पहल के तहत ड्रोन

ऑपरेटर, जैविक खेती, मशरूम उत्पादन, मूल्य संवर्धन, और विपणन में भी आगे आ रही हैं।

- **स्वयं सहायता समूह:** महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सामूहिक खेती कर रही हैं, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है।

कृषि में लैंगिक असमानता

- महिलाओं को वे अधिकार प्राप्त नहीं हैं, जो उन्हें एक कृषक के रूप में प्राप्त होते चाहिये, जैसे कि खेती के लिये कर्ज, कर्जमाफी, फसल बीमा और सब्सिडी के साथ-साथ महिला कृषकों की आत्महत्या के मामले में उनके परिवारों को मुआवजा न मिलना।
- महिलाओं को किसानों के रूप में मान्यता न मिलना उनकी समस्याओं का केवल एक पहलू है। महिला किसान मंच अनुसार उन्हें भूमि, जल और जंगलों पर अधिकार के मामलों में अत्यधिक असमानता का सामना करना पड़ता है।
- इसके अतिरिक्त, कृषि की अन्य समर्थन प्रणालियों, जैसे- भंडारण सुविधाओं, परिवहन लागत और नए निवेश के लिये नकदी या पुराने बकायों का भुगतान करने के साथ-साथ कृषि ऋण से संबंधित अन्य सेवाओं में भी लैंगिक भेदभाव है। साथ ही, निवेश और बाज़ारों तक पहुँच में भी असमानता का सामना करना पड़ता है।
- इस प्रकार, कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद महिला किसान हाशिये पर हैं, जो शोषण के प्रति बहुत सुभेद्य हैं। इस समस्या का कारण सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक है और यह इस धारणा का परिणाम है कि खेती केवल पुरुषों का पेशा है।

नए कृषि कानून और संबंधित चिंताएँ

- महिला कृषक नए कृषि कानूनों से भी चिंतित हैं। चूँकि सरकार की नीतियों का मुख्य उद्देश्य कभी भी असमानता या उनकी परेशानियों को कम करना नहीं रहा है। अतः महिला किसानों को डर है कि नए कृषि कानूनों से लैंगिक असमानता में और वृद्धि हो जाएगी।
- महिला किसान मंच के अनुसार, नए कृषि कानूनों में किसानों को शोषण से बचाने के लिये एम.एस.पी. का उल्लेख न होना प्रथम मुद्दा है। इससे महिला किसानों की सौदेबाजी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

- साथ ही, महिलाएँ ऐसी स्थिति में नहीं हैं, जो एक सशक्त एजेंट के रूप में व्यापारियों और कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ होने वाले समझौतों (लिखित) को समझ सकें या उस पर बातचीत कर सकें। इस प्रकार, किसानों की उपज खरीदने के लिये या अन्य सेवाओं के लिये इन संस्थाओं से समझौता करने में महिलाओं को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।
- यह स्पष्ट है कि किसानों को कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ सौदेबाजी की शक्ति प्राप्त नहीं होगी क्योंकि कॉर्पोरेट्स बिना किसी सुरक्षा जाल या पर्याप्त निवारण तंत्र के उपजों की कीमतें तय करेंगे। इससे महिला कृषक अधिक प्रभावित होंगी।
- परिणामतः लघु, सीमांत और मध्यम किसानों को अपनी भूमि बड़े कृषि व्यवसायिक घरानों को बेचने और मज़दूरी करने के लिये मज़बूर होना पड़ेगा।
- सरकार को महिला किसानों की परेशानियों को भी समझना होगा क्योंकि वर्तमान में हो रहे विरोध में वे पुरुषों के साथ बराबरी में शामिल हैं।



चुनौतियाँ एवं अवसर

1. भूमि पर स्वामित्व की कमी
2. तकनीकी ज्ञान की कमी
3. वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच
4. सामाजिक भेदभाव
5. शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी

अवसर: महिलाओं के लिए कृषि क्षेत्र में अनेक नए अवसर हैं:

1. एग्री-स्टार्टअप्स
2. फूड प्रोसेसिंग
3. ई-मार्केटिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म
4. जैविक खेती
5. सरकारी योजनाओं का लाभ

भविष्य की संभावनाएं

1. **कृषि उद्यमिता:** खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग और सीधे विपणन में महिलाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं।
2. **तकनीकी अपनाना:** ड्रोन और स्मार्ट खेती तकनीकों में प्रशिक्षण पाकर महिलाएं कृषि को अधिक कुशल बना सकती हैं।
3. **जलवायु-अनुकूल खेती:** महिला किसान प्राकृतिक आपदाओं को सहने वाली और कम पानी वाली फसलों को अपनाकर कृषि को सतत बना रही हैं।
4. **फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गनाइजेशन:** महिलाओं के नेतृत्व वाले FPO का गठन उन्हें बाज़ार से सीधे जोड़कर बेहतर आय सुनिश्चित कर रहा है।

समाधान

2026 को “अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष” घोषित किया जाना उनके योगदान को मान्यता देने का एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्हें तकनीकी ज्ञान, क्रेडिट और भूमि अधिकारों के माध्यम से सशक्त बनाकर, वे भारतीय कृषि को एक नई ऊँचाई तक ले जा सकती हैं।

